भिवानी कैसेट क्रमांक संख्या	107
दिनांक	05. 03. 93
समय	प्रातः

शब्द -

गुरु दया करे तो कागा से हंस बना दें।
कागा से कुरड़ी छुटवा के, मान सरोवर पर ले जाके।।
सतगुरु काग से हंस बना के, मोती ज्ञान चुगा दें।
जब सतगुरु की फिर जा माया, पल में काग पलट जा काया।
सतगुरु कर दें छत्र छाया, पल में शिखर चढ़ा दें।
पुत्र प्यारा बहुत मां का, इससे भी बढ़कर शब्द गुरु का।
बेरा ना सतगुरु रजा का, क्या से क्या करवा दें।
मिट्टी से गुरु लाल बना दें, पत्थर से कर हीरा दिखा दें।
भानीनाथ कहे शीष झुका दें, हुक्म होवे पद गा दें।।

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियों, सत्संगियों, माताओ और बहनों! जितने भी सत्संगी प्रेमी आए हुए हैं सब से विनती है कि जब तक सत्संग हो शांति से सुनते रहें।

सत्संग आपको पता है एक तारीख की शाम से शुरु हुआ था। कल भी हुआ और आज भी। सुबह–सुबह मैं उन प्रेमियों और सत्संगियों को विनती और बंदगी करता हूं कि वे धन्य हैं जो शुरु में एक तारीख को आकर सेवा में लगे थे और अपने आराम को भूल बैठे हैं। सब सेवा में मस्त हैं। भंडारे में कितनी संगत सेवा में लगी हुई है। यहां भी अपनी ड्यूटी पर बहुत लगे हुए हैं। ऐसे–ऐसे आदमी हैं जो अपने घरों में इस तरह (जागते हुए) नहीं रह सकते हैं। यहां पर राधास्वामी दयाल का दरबार है। वे अपने मालिक की ड्यूटी में लगे हुए हैं। अगर तुम मुझे महात्मा या संत समझते हो, मैं तो नहीं कहता हूं, मैं तो कहता हूं कि मैं तो आप जैसा ही भाई हूं। पर तुम्हारा मुझ पर विश्वास है तो मैं मालिक के आगे बंदगी करता हूं कि मालिक इन सब को शांति दे। इन को मालिक जो सेवा करते हैं, सबको शांति दे। सूली की सजा हो तो इनकी सूल में टाल दे। इनका सब का भल करे। सेवा करने वाले की सेवा कभी भी निष्फल नहीं जाती है। चाहे किसी की भी सेवा कर लो। सेवा सेवा ही होती है। सेवा के कारण ही सब कुछ बनता है। आपने यह शब्द गा रहे थे, सुना है? यह भानीनाथ का शब्द था। भानीनाथ और गुलाब नाथ दो चाचा भतीजा गहस्थी साधु थे। इनके बहुत उच्च कोटि के शब्द हैं। बहुत अच्छे महात्मा हुए हैं। इन्होंने कितनी अच्छी बातें कही हैं? पिछली कड़ी में कहा है कि हुकम हो तो सिर झुका दे और पद गा दे। सारा सब कुछ कहकर मौज कर दी कि सतगुरु का हुकम हो तो मैं पद भी गा दूं और उनकी दया हो तो सिर झुका दूं। सो सब कुछ बन जाता है। छोटी उम्र में एक दोहा याद था। कहते थे–

कोड़ा होए कोढ़ जा मूंधा पड़े विकार।
जिसकी वत्ति लगी रहे, उसका वार न पार।।

जिसकी वत्ति सतगुरु के स्वरूप में लग जाती है, उसका कोई वार, पार नहीं है। पर हमारे ऋषि–मुनियों संतों ने बंदगी करना बताया है। ये क्यों बताया था? क्योंकि इससे अहंकार टूट जाता है। अब अहंकार टूट जाता है। जब अहंकार टूट जाता है तो जीवन सफल हो जाता है। यह घमण्ड ही हर चीज का दुश्मन है। यही खोता है इस दुनिया से। सो घमण्ड टूटा तो सब ही काम ठीक बना। पर यह घमण्ड कब टूटता है? यह उस वक्त टूटता है जब हम सतगुरु के चरणों में सिर झुका देते हैं। सतगुरु करता क्या है? एक मिसाल मुझे याद आ गई, सतगुरु सब कुछ ही करता है। इस तरह की मिसाले गहस्थी बुजुर्ग बहुत दिया करते थे। आजकल तो इन बूढ़े आदमियों की वे मिसालें और कहानियां ही खत्म हो गई। मैं अपनी दादी से इस तरह की बहुत

कहानियां सुना करता था। आज कल ऐसी बातें कोई भी नहीं कहता है। क्योंकि आज दूसरा व्यवहार हो गया है। सवेरे ही संध्या किया करते थकै उस वक्त तो अखबार पढ़ने शुरू हो गए हैं या जब बुढ़िया शाम को शब्द गाया करती थी, उस वक्त हम टेलीविजन लगा लेते हैं। रेडियो चाले कर लेते हैं। अब उनमें देख लो, क्या आता है, हम उनमें ही लगे रहते हैं? वही विचार बन जाते हैं। सुबह उठा करते थे, काफी लोग ऐसे थे कि गीता का पाठ किया करते थे। रामायण की चौपाई पढ़ा करते थे। अब वे लोग उन चीजों को भूल गए। अब तो टेलीविजन खोल लेते हैं, देखते हैं कि खबर सुन लें या नाच गाना आ जाए। या कोई अखबार आता है उसमें समाचार खोल लेते हैं, देखते हैं कि खबर सुन लें या नाच गाना आ जाए। या कोई अखबार आता है उसमें समाचार होते हैं कि वहां वो मर गया है, वहां वो मर गया है। यही बातें आती रहती हैं। इन सब चीजों को छोड़कर मालिक की बंदगी किया करते थे। अब यह कह रहा था कि सतगुरु की रजा दया और मेहरबानी का कोई भी ठिकाना नहीं है। वे कौवों से हंस बना देते हैं। आप लोगों में भी देखे होंगे कि कौवों से हंस बन जाते हैं। जिन कौवों को तुम देखते हो उनको तो नहीं। पर वे भी परमात्मा की भक्ति करते–करते रंग बदल जाते हैं। काक भुषुन्डि जी तो कौवा ही था पर गरूड़ जी महाराज को शंका हो गई और उस शंका से बड़ा भारी दुखी हो गया। वह काक भुषुण्डि जी के पास गया। उसने उसकी सारी शंकाए दूर कर दी। कहते हैं कि काक भुषुन्डि जी के पास सोलह कोस तक माया नहीं रहती थी। उनका क्या जादू था? जादू उनके पास यही था कि उनके पास नाम की कमाई थी। मैं तो सुनी हुई मिसालें देता हूं। मैंने सुना है कि काक भुषुन्डि जी बैठे थे और उनके गुरु महाराज आ गए। उन्होंने आंखें बंद कर ली। उन्होंने आंखे बंद इसीलिए कर ली कि लोग उसे खड़ा होते देखकर यही कहेंगे कि ये देखो भक्त इनको देख कर खड़ा हो लिया। इसमें तो मेरा निरादर हो जाएगा। आंखें बंद कर ली वहीं शिवजी का मंदिर था। जब वह गुरु का आदर करने के लिए नहीं उठा तो शिव जी के अन्दर से आवाज आई–ओ नालायक! तू अजगर बन जा। तू गुरु का निरादर करता है। गुरु महाराज तो बहुत दया करते हैं। उन्होंने कहा–महाराज! ये तो अज्ञानी है। ऐसा न करो। मैंने ग्रंथ नहीं देखा। मैं तो महात्माओं की सुनी हुई बातें बताता हूं। गुरु ने दया करके कहा–इस तरह न करो। फिर भी उसका विचार था कि मुझे कौवा बना दो। मैं राम के दर्शन करना चाहता हूं। अब वह काक भुषुन्डि बना। गुरु ने उसकी अजगर योनि तो छुटवा दी। गुरु महाराज दया करते हैं तो कौवों से हंस बना देते हैं। बड़े–बड़े पापी इनकी शरण में आकर तिर गए। कल भी मैंने बताया होगा कि जैसे वाल्मीक जी थे शब्द आता है–

वाल्मीक खोटे कर्म करे था, लूट-लूट धन लाते।
सप्तऋषि बन खंड में मिलगे, वे सतमार्ग दर्शाते।।

सत्संग में आके पापी पार हो जाते।

सत्संग में आकर बड़े–बड़े पापी पार हो जाते हैं। जैसे सदन कसाई जैसों को भी सत्संग लग गया। वे कौवों से हंस बन गए। आज उनके फोटो मंदिरों में, घरों में लगाते हैं। वे कौवों से हंस बने तभी तो उनके फोटो लगाते हैं। अजामिल बहुत भारी अत्याचारी था। जिसको बदलु मंगल कहते हैं। सूरदास के बहुत भारी घटिया विचार थे। पर उसने कितने काम किए। वे कौवे से हंस बन गए। सत्संगियों! मैं दूसरों की भी क्यों कहूं? तुम अपनी निगाह पसार कर देखो पहाड़ पर जलती आग दिखती है। पांव नीचे जलती नहीं दिखती। मैं अपनी बातें आप लोगों को नहीं कहता हूं। दूसरों के टींड तो चार आने धड़ी बिकते थे और मेरे टींड दो आने धड़ी बिकते थे। मेरे पास से गुजरते हुए भी बदबू आया करती थी। मैं सच्ची बातें कहता हूं। बनावटी कभी नहीं कहूंगा।

मैं एक जगह पर गया। मैं वहां बैठा था। नाम लेने में भी कोई नुकसान नहीं। भिवानी में एक माता

की धोंक मारते हैं परली ओर एक खातियों का घर था। उस खाती का मैं भूल गया। उसका नानका भेरा गांव का था। मेरा नानका भी भेरा का था। मैं उसके घर पर चला गया। वहां महाराज साधू मंगलानंद जी आए हुए थे। मेरा और महात्मा मंगलानंद का बड़ा प्यार था। जब मैं वहां पर गया तो मेरे बहुत मैले–मैले कपड़े थे। बदबू आ रही थी। मैंने महात्मा जी को सिर झुकाया और बैठ गया। मेरे कपड़ों पर मक्खी लगी हुई थी। हमारी बहन मामकौर आई। उसने कहा–भाई! यहां बैठ जाओ। महाराज जी मंगलानंद ने कहा–क्यों? क्या बात है? उसने कहा–महाराज! इसके कपड़ों पर मक्खी लगी है और बदबू आती है। आपको भी मक्खी लगती है। उन्होंने कहा कि कोई बात नहीं है, मामकौर! इसका प्यार देख, कितना है? इतनी छोटी उम्र का लड़का है। फिर भी इतना प्यार है। मुझे इसके कपड़ों में से बदबू नहीं आती है। उसने कहा कि नहीं जी। तो मैं दूर बैठ गया। उसकी बातें सुनता रहा। घर चला गया।

यही हालत एक दिन और भी हुई। उस वक्त मैं एक मंदिर में बैठा था। वहां भी हमारे घरों का कोई प्रेमी था। उसने कहा–तेरे कपड़े देख, बदबू आती है। तू किस कर्म का है? तू खड़ा हो जा यहां से। मुझे किसी ने भी शांति नहीं दी। मैं खड़ा हो गया। एक महात्मा उठा। उसने कहा–बैठ जा। जो हमारे गांव के जो मेरी बदनामी करने वाले थे उनको उसने कहा–क्या बदबू आती है? क्या तेरी बहन से शादी करनी है इसने? तू उठ कर चला जा। ये यही रहेगा, इस मंदिर में इस संगत के बीच में। मैंने कहा–मेरी बाबत शोर शराबा मत करो।

सत्संगियों! सतगुरु की दया अपार होती है। ये बातें मैं सुनता हूं कि सतगुरु कौवों से हंस बना देते हैं। अरे! हंस नहीं। वे पता नहीं क्या बना दे? हंस का तो नाम ही बड़ा है। वह तो फिर भी एक पक्षी ही तो होता है। उनका पता नहीं, वे पारस बना सकते हैं। उनका पता नहीं कि वे ऐसी चीजें बना दें कि हंस और अंश सब कुछ ही उसमें समा जाए। बल्कि सतगुरु तो परमात्मा ही बना देता है। इससे आगे क्या कहोगे? वह परमात्मा तो सभी कुछ कर सकता है। कल मैंने कहा–

सतगुरु राजी तो कर्त्ता राजी।
काल कर्म की लगे न बाजी।।

अर्थात सतगुरु राजी होता है तो कोई कुछ भी नहीं कर सकता है। मैं एक महात्मा के सत्संग में जाया करता था। वह महात्मा सत्संग करते–करते कहा करता था कि यह पहुंच गया है। यह आगे जाकर हंसों की डोर को खींचा करेगा और थोड़े ही दिन में बात करते तो हम पूछते, क्या हुआ? वह कहता कि यह तो गिर गया है। मैंने सोचा कि कल तो यह चढ़ गया और आज गिर गया। यह बड़ा तमाशा है। पर मैं भी कहता हूं कि पता नहीं है। वह ठीक ही कहा करता था कि सतगुरु की चढ़ा नजर और हुआ बज्र और सतगुरु की नजरों से गिरा–गिरा–गिरा वह गिर ही जाता है। यह सच्ची बात है। झूठी नहीं। वास्तव में संत महात्मा, कागों से हंस बना देते हैं। उसके कर्मों को भी काट देते हैं। एक शब्द गाया करते थे–

कर्म काट कोयले किये, सतगुरु बने लुहार।

सतगुरु कर्मों को काट कर कोयले बना देते हैं। सतगुरु लोहार होता है। जैसे लोहार कोयले बना देता है। पर सतगुरु होना चाहिए। धोखेबाज नहीं। सतगुरु की महिमा भारी है। यह कितनी बड़ी बात कही है। वह कुरड़ी छुटवा कर दरिया के किनारे पर ले जाकर मोती चुगवा दे। वह कुरड़ी तो यही है कि जीव इन विषय–विकारों में लगे हुए हैं और रात–दिन खोटे धंधे करते हैं। संत सतगुरु उस कुरड़ी पर से जो बिष्टे में चोंच मारता था उसके भैड़े कर्मों को छुटवा कर उसको उस दरिया के किनारे पर ले जाता है जहां पर मोती पैदा होते है। वह दरिया का किनारा कौन सा है? कहने वालों का तो मुझे पता नहीं है। मैं तो अपनी बात बताता हूं। मुझे पता नहीं है। मैं तो अपनी बात बताता हूं। वह दरिया का किनारा तुम्हारा दिल है और

इस दिल में भरे ऐब निकल जाते हैं और उसमें पवित्र दरिया उमड़ उठता है। उसको नाम रूपी मोती चुगवा देता है। जब नाम रूपी मोती चुगता है तो सब कुछ बन जाता है। महात्माओं से सुना था वे ऐसे भी कहा करते थे–

हदय जमीं को साफ करो, प्रेम के जल से सींच, जुगत से रखना।

सतगुरु बो गए बीज, जुगत से रखना।।

जब वह बेल चढ़ी ऊपर को, फिर नहीं लगेगा कीच, जुगत से रखना।

सतगुरु बो गए बीज ..... ।

जब वह बेल या सुरत ऊपर की ओर चलती है तो नौ द्वारों को खाली करके दसवीं गली में जाती है। फिर उस पर कीच नहीं लगता है और वह अपने मैंले कामों को छोड़ कर आगे हंस गति में आ जाती है।

अब कौन सी बातें आप लोगों को बताऊं, जिसको ऐसी–ऐसी हालतें बताई हैं, उसी गरीब के लिए आप सारी रात से बंधे बैठे हो कि वह आएगा और कुछ सुनाएगा। अब तो समझ गए होगे कि सतगुरु कागों से हंस बना देते हैं। पर नजरों से नहीं गिरना चाहिए। मेरे पास ऐसे आदमी आए और रहे। सत्संगी यू कहा करते थे कि यह तो तिर गया है बस। इसके बिना तो महाराज जी भी पांच मिनट नहीं रह सकते हैं। सुबह–सुबह मैं नाम तो नहीं लेता क्योंकि जो गुरु द्रोही बन जाते है उनका नाम लेने में रिजक और रोजगार घट जाता है। मेरे सामने आ गया है। एक यह अमरचन्द बैठा है। यह प्रेमी मेरे पास रहा करता था। उसकी बातें सुन कर इसके दिल में आग भड़की। इसने कहा–यह बहुत घटिया आदमी है। मैंने कहा–ऐसे मत कहो। मेरे गुरु महाराज ने कहा कि इसे क्या सिर पर चढ़ा रखा है। यह बहुत घटिया है। मैंने कहा–आप को सभी घटिया दिखते हैं। पर आगे आते हैं तो गिर जाते हैं। इन महात्माओं की बातें सच्ची निकलती हैं। कबीर साहब ने इन लोगों की ऐसी–ऐसी निशानियां बताई है कि जिनमें ये लक्षण हैं वे सत्संग के काबिल नहीं हैं। ये–ये उनके लक्षण हैं। काफी मैं बता देता हूं और मैं उन लक्षणों को जानता भी हूं। फिर भी हमारे पास जो कोई आता है उसको नाम देकर कहते हैं कि कभी न कभी सुधर जाएगा। ऐसे आदमी जब पास रहते हैं उनकी कमियों को देखकर मैं घबरा जाता हूं। सोचता तो यही हूं कि फिर भी यह सुधर जाएगा। कभी न कभी तो सुधरेगा। पर फिर उनका ढंग बिगड़ा दिखता है तो हंसों से फिर काग हो जाते हैं और कई–कई भागी कागों से हंस बनकर और भी आगे चले जाते हैं। यह सतगुरु की दया होती है। सतगुरु जब राजी होता है तो चाहे सो कर देता है। आगे कहते हैं–

जब सतगुरु की फिर जा माया, पल में काग पलट जा काया।

सतगुरु कर दे छत्र छाया, पल में शिखर चढ़ादे।।

ये बातें मैं कह भी गया हूं अब उसका मैंने नाम नहीं लिया क्योंकि कहते हैं कि गुरु द्रोही का नाम लेने से सब किसी चीज का नाश हो जाता है। पर जब गुरु छत्र छाया करते हैं तो उसकी काया ही पलट जाती है। उसको वे शिखर पर चढ़ा देते हैं। किस तरह? हमारा एक प्रेमी भाई था। वह गुजर गया है। वह कहा करता था कि ये महाराज है न जिसका नाम ले देता है वही ऊंचा चढ़ जाता है। क्या यह भाई रतीराम कोई ज्यादा बड़ा आदमी है? पर उसका बार–बार नाम लेता है। इसीलिए लोग उसकी इज्जत करते हैं। संतों का पता नहीं क्या करके क्या कर दे। यही बात है कि वे शिखर पर चढ़ा देते हैं अपनी छत्र छाया करके और उस छत्र छाया की बातें भी आप समझ गए होंगे कि वे कितनी छत्र छाया करते हैं? चाहे वह लड़की हो या लड़का हो चाहे कोई भी हो उनको अपनी दया मेहर से इतना बड़ा कर देते हैं कि बड़ा भारी। मैं महाराज फकीरचन्द जी के पास गया। उन्होंने मेरी ओर देखा और उन्होंने कहा–संत ताराचन्द! तू क्यों घबराता है? तू भी इस संसार में फिर नहीं आएगा और मैं भी नहीं

आऊंगा। मैं गौड़ ब्राह्मण हूँ और राधास्वामी धाम से आया हूँ। आप को सच्ची बातें बताता हूँ। पर मेरी एक बात मानना। मैंने कहा–बताओ जी। उन्होंने कहा–मूंडा देना, मूंडी न देना किसी को। आप इस का भावार्थ समझते होगे कि किसी को घटिया न बोलना। अच्छा बोलना। क्योंकि–

साधु बोले सहज स्वभाव, साधु का कहा मिथ्या नहीं जा।

अगर वह सहज स्वभाव भी कुछ कह देता है तब भी वह मिथ्या नहीं जाता है।

संतन की वाणी, झूठी हो तो भी सच्ची करके जानी।।

उनकी उस झूठी वाणी को भी सच्ची मान लेना चाहिए। वे सूली की सूल कर देते हैं और कागों से हंस बना देते हैं। वे निश्चित ही शिखर पर चढ़ा देते हैं। उनकी दया व मेहर का कोई भी वारोपार नहीं है। कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। सतगुरु की इतनी दया होती है कि उसका कोई ठिकाना ही नहीं है। मैं किस–किस की बातें सुनाऊँ? ऐसे–ऐसे पापी उनकी शरण में आ जाते हैं। लोग उनकी इज्जत करना शुरू कर देते हैं कि ये महाराज जी के पास रहता है।

एक लड़का हमारे पास रहा करता था। वह चला गया। हमारे आश्रम में एक ऐसी बीमारी फैल गई थी कि बड़ी भारी। क्योंकि रेडीशन बताता हूँ। चोर आता है तो हर ओर चोर की रेडीशन घूम जाती है और कोई महात्मा आ जाए तो उसकी रेडीशन भी सारे मकान में घूम जाती है। मैं तो तुलसीदास का हवाला देता हूँ। तुलसीदास जी कहते हैं–

संत चरण गंगा की धारा।
जहाँ टिके हो निस्तारा।।
संत चरण अड़सट से उत्तम।
भूमि पवित्र जहाँ पग धरते।।

भूमि पवित्र कैसे होती है? कोई महात्मा या कोई गुरुमुख आ जाता है, उसके सारे मकान में परमाणु फैल जाते हैं। गंदे परमाणु निकल जाते हैं और अच्छे परमाणु फैल जाते हैं। सभी के विचार पवित्र हो जाते हैं। कल मेरे पास एक प्रेमी राजपाल आया था। उसने कहा–अपने आश्रम में हीरानंद आर्य गया था। मैंने कहा–क्यों? कोई काम था कि फलां जगह ये करना है वह करना है। महाराज की कुछ मदद कर दे। वे शराब के बारे में बहुत कहते हैं। मैंने कहा–आप लोग तो शराब छुटाते ही नहीं है। प्रचार उल्टा करते हो। शराब छुटाओ तो पहले आप पवित्र बन जाओ। फिर आप ही आप छुटती चली जाएगी। कहने की ही जरूरत नहीं है। उसने कहा–यहाँ आकर शांति सी मिलती है। यहाँ बगीचे में घूमा, ये देखा और वह देखा, शांति मिलती है। वह शांति है कहा? जो मेरे पास बुजुर्ग रहते हैं वे भजन करते हैं। उन बुजुर्गों की ही शांति है वहाँ। जिस घर में एक बुजुर्ग है और वह भजन सुमरन करता है तो उस समय में शांति आ जाती है। वहाँ कइ बुजुर्ग रहते हैं वे भजन करते हैं भजन करने से शांति आ जाती है। तेरे अन्दर शांति नहीं है। इसीलिए मैं आपको कितनी मिसालें देकर बताऊँ कागो से हंस बनने की? मैंने तो अपनी ही मिसाल आपको दी है। मैंने तो अपने ही विचार आप को बताए हैं कि मैं तो एक अरंड का वक्ष था। काग था और सतगुरु अरमान साहब मेरे दाता ने दया की, आप लोगों के पास बैठने के लायक हो गया। आप लोग भी मेरे पास आ जाते हो दया मेहर करके। आप आकर बैठते हो तो मुझे भी अपना काम पूरा करना पड़ता है। पर मैं यह बता देता हूँ कि मेरी प्रारब्ध ही है सत्संगियों! सतगुरु का मिलना बड़ा मुश्किल है। सभी चीजें संसार में मिल जाती हैं। स्वामी जी की वाणी आप ने सुनी होगी।

सतगुरु खोजो हे प्यारी! जग में दुर्लभ रत्न यही।

अर्थात समुद्र मथन से चौदह रत्न निकले थे। पर उनमें से किसी भी रत्न से उद्धार नहीं हो सकता है। पर जो यह पन्द्रहवां रत्न है यह तो किसी भागी को ही मिलता है और जिसको यह रत्न मिल जाता है उसका

जीवन सफल हो जाता है। एक सो एक पीढ़ी तिर जाती है। कबीर साहब कहते हैं–

एक सौ एक पीढ़ी, तारे म्हारी हेली जो कोई तारण हो।

कोई तारणे वाला होता है तो एक सौ एक पीढ़ियाँ तिर जाती है। अब यही तो कहा है कि कागों से हंस बना देते हैं और किसी की तो किसकी मिसाल देकर बताऊँ? और भी कई ऐसी–ऐसी बातें आ जाती है। संत महात्मा शिक्षा देकर दया मेहर करते हैं उनके ऐब छुटवा देते हैं। पर मैं ये भी बता देता हूँ।

एक छोड़ दो को ध्यार्व।
जिसका ले ले सरना।
उसी से पार उतरना।।

ये सतगुरु की बातें हैं। अपने सतगुरु की स्टेज के ऊपर कोढ़ी कंगला, अंगहीन, भिखारी बिठाया जाता है तो समझो कि हम एक साल पीछे चले जाते हैं। हम अपने गुरु का निरादर करते हैं। उसके पास बैठ कर हम अपने आपको खो लेते हैं। हंस से उलटे ही काग बन जाते हैं। जब हम अपने सतगुरु को दोनों भवों के बीच में प्रगट कर लेते हैं तो हम अपना सारा जीवन ही सफल कर लेते हैं। यही संतों ने बताया है। बल्कि यहाँ तक भी कहा जाता है। मेरे बस की भी बात नहीं है।

एक दिन कोई बात चली हुई थी। एक प्रेमी ने कहा–भाई! तू आदमी तो बड़ा अच्छा है। मैं तेरे पास आ गया। यह बादली वाले चौ० इन्द्राज की बात है और उसके चेले का चेला था। वह उसके पास आया था। सुनारियों की बणी में। यहाँ भजन की सुनी हुई कहता हूँ। वह हमारा बड़ा अच्छा प्रेमी है। वह आकर बैठा और उसने कहा–अरे! तेरे अन्दर एक ही गुण है। इसीलिए आ जाता हूँ। नहीं तो तेरे दर्शनों से तो काल सिर पर आ बैठता है। अंगहीन के तो दर्शन करने से ही पाप चढ़ जाता है। तू तो अंगहीन है। तेरे दर्शन कर लिये तो समझो एक खस्सी बैल के दर्शन कर लिए। चौ० इन्द्राज बादली वाला बेधड़क साधु था। संत था। वह दोनों ही तरह के साधन जानता था। वह बाहर का भी और भीतर का भी और तो कोई भी नहीं जानते थे। सभी बाहर के साधन में फंसे बैठे थे। तेरा बस इतना ही है कि तू कमा कर खाता है नहीं तो तुम्हारे दर्शनों में ही टोटा है। फायदा नहीं है। क्योंकि तू अंगहीन है। इसीलिए दाता दया कर दे। सतगुरु की शरण में ही रखे। काफी लोग कहते हैं कि सतगुरु चोला छोड़ गया। सतगुरु स्थूल शरीर को ही छोड़ता है। सूक्ष्म रूप से वह हमारे साथ ही रहता है। कभी भी शब्द हमारे से दूर नहीं जाता है। सदा पास ही रहता है। कई लोग कहते हैं कि परमात्मा तो इस थोथ का नाम है। वे बेचारे भोले हैं उनको तो इतना ही पता है। थोथ का नाम परमात्मा नहीं है। निगरपन अथवा ठोस का नाम परमात्मा है। परमात्मा ही थोथा हो गया तो पार नहीं पड़ेगी। कहीं गिर जाओगे। परमात्मा ठोस (निग्गर) है। वह कहीं दिखते हुए भी नहीं दिखता है। उसको पकड़ भी लेते हैं, फिर भी पकड़ से बाहर हो जाता है। वह सब कुछ करता है और सब कुछ करता भी नहीं दिखता है। कबीर साहब की वाणी है। कल उनका शब्द गाया था। संतों, महात्माओं की वाणी ऐसी ही होती है। कबीर साहब को क्या कहा जाए?

हिन्दू तो वेदों में ढूंढे, मुसलमान कुरान।
ये दोनों कागज में रहेंगे, हाथ न आया निजनाम।।

खस-खस समाना, मेरू समाना।

क्या कहते हैं कबीर साहब, वह छोटा भी कितना है और बड़ा भी कितना है। मेरू पर्वत को ही कहते हैं। मुझे पता नहीं मैंने अपने विचार बताया है। पढ़े लिखे जानते होंगे।

खसखस समाना, मेरू समाना राई में खलक जहान।

राई के अन्दर सभी कुछ समा गया।

चोदह तबक का गर्व निवारा रहा ठाम की ठाम।।

वही बात आ जाती हैं। वह सारी दुनिया का

भला भी करता है। बुरा भी कर्म के अनुसार, फिर रहा भी ठाम की ठाम ही है। किसी को किसी तरह दर्शन देता है और किसी को किसी तरह से।

सुना है हमने गुरु अपने का ज्ञान।
ता सुमरे भय काल न व्यापै।।

उसका क्या सुमरन करना होता है? उसका सुमन तो उसका ख्याल ही रखना होता है। उस शद का सुमरन कौन कर सकता है? सुमरन तो ख्याल से पकड़ा जाता है। सुमरन नहीं होता है। सुमरन तो यही है कि हम उसका ख्याल बनाए रखें। इसे ही सुमरन कहते हैं कि उस शब्द की कैसी आवाज है? कैसा रंग रूप है? इसे ही कहते हैं–

ता सुमरे भय काल न व्यापै, ये पद है निर्वाण।

उसको सुमरन करने से भय काल नहीं व्यापता है। यही निर्वाण का पद है। इसी से सब शांति मिल जाती है। यही ऊँचे से ऊँचा पद है।

कहे कबीर सुनो भाई साधो, मिट ज्यागे आवण जाण।

जो भी इस शब्द की लाइन पर चल पड़ा और शब्द की कमाई कर ली उसका आना जाना मिट जाता है। वह कभी भी जन्म–मरण में नहीं आते हैं। इस तरह संत महात्मा कागों से हंस बना देते हैं। पर बताई हुई बातें सुनी, कोई तो कुरानों में ढूंढे, कोई वेदों में ढूंढे उनके दोहे चौपाई याद करके लड़ाई झगड़ा करना शुरू कर देते हैं। अगर उनको ये कह दे कि सतगुरु की शरण ले कर चल, वे गुरू द्रोही होते हैं, वे गुरुओं पर जो आक्षेप करते हैं, उन्हें ये पता नहीं है। सतगुरु किसको कहते हैं? मैं भी इन बातों से नाराज हूँ कि कई लोग तो गुरुडम में फँस कर मर जाते हैं। इन गुरुओं को न करणी का पता है, न कर्म धर्म का पता है। उनमें ही फँस करके अपना जीवन बर्बाद कर लेते हैं। मैं बाघपुर गाँव में जाया करता था। वहाँ हमारी भुआ और उसकी माँ थी। मेरी दादी। उसको उस भूआ ने कहा–माँ! तू नाम ले ले। उसने कहा–किसका? भूआ ने कहा–महाराज जी आए हैं। उनसे गुरु मंत्र ले ले। उसने कहा कि मैंने तो गुरु बना रखा है। सोचो इस तरह बंध जाते हैं। वे बेचारे क्या जाने? वे बंध कर दायरे के अंदर ही रह जाते हैं। न उस गुरु को ही कुछ पता है और न उस चेले को ही कुछ पता है। मैं अपनी देखी और सुनी मिसाल बताता हूँ। उसने कहा–गुरु कौन बना लिया? उसकी माँ ने कहा–बेटी! वो जूती गाँठता है बाजार में, वह चमार बनाया है। भूआ ने पूछा–किस तरह बनाया था गुरु? उसकी माँ ने कहा–वह शब्द बहुत गाया करता है। उसको घर बुला लिया। उसको सवा पाँच रुपये और सारे कपड़े दे दिए। पाँच सेर आटा दे दिया और उसके पाँव में सिर टेक कर कह दिया कि आज से तू मेरा गुरु है। उसने कहा–अच्छा। भूआ ने पूछा–और उसने क्या बताया। वह बोली कि उसने बताना क्या था? जब वह गुरु ही बन गया तो सोचो! मैंने ये झमेले बहुत देखे हैं। क्या उससे वह तिर गई? सारा जीवन ही उस अपनी लग्न में रही तो उसका तो जीवन ही बर्बाद हो गया। वह कैसे तिरी? उसको कहते हैं–

आँधी दुनिया मोधू ज्ञान।
लाँडा भूत करै घमसान।।

ये घमसान यू हो जाते हैं। सारा जीवन ही बर्बाद हो जाता है। उन गुरुओं से तो कागों से हंस नहीं बन सकते हैं। कागों से हंस तो उन्हीं सतगुरुओं से बनते हैं जो उनके चोले को बदल देता है। देखा तो नहीं सुना होगा कि महात्मा रात को चोला बदलता है। वे शेर बनते हैं, गीदड़ बनते हैं। भैंस अगर बन जाए तो दूध तो दे दें। इसी तरह वे कहते हैं कि बदलते हैं। मैं भी कहता हूँ कि संत चोला बदलते नहीं, बदल देते हैं। पर वे गुरु चोला कैसे बदलेंगे जो घर में तो ठीक थे पर उनके पास जाकर सुलफा और पीने लग गए। चोला बदल दिया नाश करने का। घर में थे तब तक तो ठीक थे पर जब उन गुरुओं के पास गए तो वहाँ जाकर शराब पीने लग गए और घटिया काम सीख गए। उन्होंने चोला क्या बदला? उनको आप महात्मा कहते हो। लानत है। वे तो उल्टा नर्क का रास्ता

बताते हैं। संत महात्मा तो ऐब छुटवाते हैं। कोई भी जाति कौम का हो, अगर तुम उसके पास जाते हो और तुम्हारे ऐब छुटवाता है तो समझ लो कि उसने हमारा चोला बदल दिया है। यहाँ बहुत आदमी बैठे हैं। किसी की शराब छुट गई है, किसी के सुलफे, गाँझे और घटिया कर्म छुट गए हैं। चोला बदला, इसी का नाम है। जसे मेरा चोला मेरे सतगुरु ने बदला। मैं भी ऐसी ही बात बताता हूँ कि जिन के ऐब छुट जाते हैं उनके चोले बदल जाते हैं। ये चोला बदलना है और वे गीदड़ से शेर बन जाते हैं। क्योंकि भैड़े कर्म तो छुट गए। अच्छे कर्म सीख गए। वे किसी की परवाह नहीं करते हैं। वे तिर जाते हैं। पर मैंने तो आज तक ये बातें नहीं सुनी है। कोई ऐसा आदमी भी बैठा होगा कि किसी आदमी को शेर बनता देखा हो। कोई आदमी अपनी हड्डियों को बिखेर देता हो। लोग कहते हैं। मैं अपनी ही बातें कहता हूँ कि मैं अपने घर में रहा करता था। मेरे गांव में मेरे परिवार के मेरा कमरा न खोलना। इतना प्रचार कर देते थे कि अमरचन्द जैसे और रतीराम जैसे जब आते थे तो इनको कहते थे कि किवाड़ न खोलना क्योंकि महाराज के तो हाथ कही पड़े थे और पाँव कहीं पड़े थे। सिर कहीं पड़ा था। ये तो अपना चोला बदले हुवे पड़े थे। कुटिया खोलना। नाश हो जाएगा।

सत्संगियो! मैंने इस तरह चोला तो कभी भी नहीं बदला। सुबह–सुबह ही यू बताता हूँ। मैंने यू चोला जरूर बदला कि आज मैंने फलां आवाज सुननी है अन्तर में और आज मैंने अंतर में फलां चीज देखनी है। य चीजें तो जरूर देखी जिद्द करके अगर नहीं दिखाई दी तो उठा ही नहीं। इस तरह मैं जरूर बैठा रहता था। पांच–पांच, दस–दस घण्टे बीत जाते थे कि जब शरीर सूना होगा तब ये बातें बनेंगी। यू तो मेरा चोला बदलना था। पर जो दूसरा चोला जो बताते थे वह तो मैंने कभी भी नहीं बदला। लोग पता नहीं क्या–क्या कह दिया करते थे। आप बताओ, झूठ पाँव पर चलती थी कि नहीं? इसी तरह से और महात्माओं की भी बातें चल पड़ती है। चोला बदलने का अर्थ यही है और कुछ नहीं। मैंने जब शाम को आपसे पूछा था कि क्या किसी ने कल्प तरू वक्ष को देखा है? पर तुम्हारी सारी जिन्दगी गीत गाते–गाते गुजर गई कि एक कल्प तरू वक्ष भी होता है। उसके नीचे बैठते ही मनशा (इच्छा) पूर्ण हो जाती है। वह कल्प तरू वक्ष तो संतो का निज सत्संग है और यह भी सुना है कि कामध्नु गाय भी होती है। मैंने शाम को कामध्नु गाय भी बताई थी कि 'औ३म्' कामधेनु गाय होती है और असली पूछना चाहते हो तो संजीवन मूल मंत्र या अमर फल तो धुनात्मक नाम ही है। समझो जब तो यही बात है और न समझो तो तुम्हारी मर्जी है। इसलिए सतगुरु कागों से हंस बना देते हैं और तुमने कागों से हंस बने हुए बहुत लोगों को देखा भी होगा। वे लोग तिर जाते हैं। इसीलिए–

सतगुरु सरने जाइए म्हारी हेली, कोट कर्म काट जाहिं।

अर्थात् सतगुरु की शरण में जाने से करोड़ो जन्मों के पाप कट जाते हैं।

पहले बुरा कमाय के विष की बांधी पोट
कोट कर्म पल में कटे जब आए, सतगुरु की ओट।।

जब जीव सतगुरु की ओट में आ जाता है तो उसके कोटि जन्मों के कर्म कट जाते हैं। इस तरह से कागों से हंस बना देते हैं। आगे कहते हैं–

पुत्र प्यारा बहुत है माँ का, इससे भी बढ़कर शब्द गुरां का।
बेरा न सतगुरु रजा का क्या से क्या करवा दे।।

माँ को पुत्र बहुत प्यारा होता है। अगर तुम इतना प्यार उस शब्द से कर लोगे तो हंस बन जाओगे। जो गुरु का शब्द है वह तो बडत्र भारी तीर्थ और गंगा है वह भारी जादू और पारस होता है उस शब्द से इतना प्यार करो जैसे माँ अपने पुत्र से प्यार करती है। हम उस शब्द को ही सतगुरु कहते हैं। मैं कई बार बताता

हूँ कि सतगुरु का नाम ही ज्ञान समझ और विवेक का है। उसको नाम कहो या सतगुरु या शब्द कहो। जैसे माँ को पुत्र प्यारा लगता है। इतना प्यार उस शब्द से कर लो फिर कसर कुछ भी नहीं रहेगी। सारी कसर मिट जाएगी। आप लोग कहते हो, मैंने कल ये बात कई देर कही होगी, फिर भी कहता हूँ कि आप कितनी ही बड़ाई करो कि महाराज जी बड़े प्यारे लगते हैं। मैं कहता हूँ कि किसी का नाम मत पूछो सुबह–सुबह। सतगुरु तो कुत्ते जितने प्यारे भी नहीं लगते हैं। ऊपर से तो कहते हैं कि सतगुरु प्यारा लगता है। पर अंदर से तो .....। कत्ता अगर मर जाए तो रो लेंगे पर सतगुरु को तो कभी याद भी नहीं कर सकते हैं। अगर तुम तिरना चाहते हो तो सतगुरु की जितनी कद्र होनी चाहिए उसको तो छोड़ो। अपने पुत्र जितना ही उससे प्यार कर लो। यही तो भानीनाथ कहता है, जैसे पुत्र प्यारा माँ को, ऐसा ही प्यारा हो शब्द गुरां का। अर्थात वह जो शब्द है वही तो सतगुरु है।

शब्द गुरु चित्त चेला, संतों ने दिया हेला।

शब्द गुरु है और चित चेला है, ये संतों ने हेला दिया है। सो तुम इतना प्यार करो जितना माँ को पुत्र प्यारा लगता है। इतना प्यार अगर तुम उस शब्द व नाम से कर लो तो तिर जाओगे और कागों से हंस बन जाओगे। कोई कसर ही नहीं रहेगी। यही बताया है उसने। पर क्या कोई अपने पुत्र जितना प्यार अपने सतगुरु से करता है? कल एक बुढ़िया को मैंने देखा, उसके आँसू बह रहे थे, वह रो रही थी। मैंने कहा कि क्या बात हो गई। उसने कहा कि मेरा पोता खो गया है। वह तो बोलना भी नहीं जानता है। दस बारह वर्ष का गुम हो गया है। मैंने कहा–इतना प्यार अगर उस मालिक से हो तो कहना ही क्या है। आपने तुलसीदास की बातें सुनी होंगी।

इतनी नीत हराम में इतनी हर में होय।
चाला जा वैकुण्ठ में पल्ला न पकड़े कोय।।

तुलसी की पत्नी ने यह बात अपने पति को कही थी। मैं तो अपनी माता, बहनों और बुजुर्गों को कहता हूँ कि जितना प्रेम तुम्हारे अपने पुत्रों से हैं इतना प्यार भी अगर तुम शब्द से कर लो तुम्हारा जीवन ही सफल हो जाएगा। पर उस शब्द का रस तो बाद में ही मिलता है। वह प्यार करने से मिलता है। पर इस औलाद का परिवार का धन का तो मन का मोह और खेल है। उसमें फँस कर हमारा निकलना मुश्किल हो जाता है। सो उससे अगर हम निकल जाए तो सतगुरु का शब्द हमें आकर ले जाएगा और तिर जाएँगे। इसे कागों से हंस बनना कहते हैं। कागों से हंस बन जाता है। जैसे माँ अपने पुत्र से प्यार करती है इतना गुरुमुख को अपने नाम या शबद से प्यार करना चाहिए। वही तो सतगुरु है। जिसका शब्द नहीं खुल रहा है उसको सतगुरु नहीं कहा जाता। उसको तो गुरु ही कह सकते हो, शिक्षक कह सकते हो। सतगुरु तो शब्द खुलने पर ही माना जाता है। आगे कहते हैं–

मिट्टी से गुरु लाल बना दे, पत्थर से कर हीरा दिखा दे।

भानीनाथ कहे शीष झुका दे, हुकम होवे पद गावे।।

सतगुरु मिट्टी से लाल बना दे और पत्थर से हीरा बना कर दिखा दे और पता नहीं वह क्या–क्या कर दे। और सतगुरु हुकम दे दे तो चाहे सो करके दिखा दे। ये बातें मैंने भानीनाथ की बताई हैं। सतगुरु के हुकम की ही ढील है उसने किस–किस का क्या नहीं किया? सतगुरु की कितनी महिमा है, मैं क्या कहूँ? सब की चौंध खुल जाती है।

प्रेमियो! इसीलिए मैंने काफी बार आपको सत्संग सुनाया। अगर कोई इकतारा हो तो एक शब्द सुना दूंगा–

आए थे किस काम को कर बैठे के बात।
के मुख ले मिलिए राम से खाली दोनों हाथ।।
महरम हो सोए जाणै भाई साधो,
ऐसा है देश हमारा हो जी.....।
बेद कतेब पार नहीं पावै,
कहन सुनन से न्यारा हो जी .....।

जात वर्ण कुल क्रिया नाहीं,
नाहीं संध्या नेम अचारा हो जी ...।
बिन जल बूंद पड़े जहां भारी,
नहीं मीठा नहीं खारा हो जी ....।
सुन्न महल में नौबत बाजैं,
किंगरी बीन सितारा हो जी .....।
बिन बादल जहां बिजली रे चमकें,
बिन सूरज उजियारा हो जी .....।
बिन नैन जहाँ मोती रे पोवे,
बिन सुर शब्द उचारा हो जी ...।
ज्योति लजाए ब्रह्म जहाँ दररसै,
आगे अगम अपारा हो जी ...।
कहैं कबीर वहाँ रहन हमारी।
बूझै कोई गुरुमुख प्यारा हो जी ..।
महरम हो सोए जाणै भाइ साधो .....

एक शब्द सुना दिया, काफी है। कितने दिन सत्संग करते–करते हो गए? क्या किया इन बेचारों ने? मैं तो इन औरों को देखता हूँ। मेरे ऊपर तो सतगुरु की बड़ी अच्छी दया है कि आपकी हाजरी पूरी–पूरी बजा दी। अब टाइम काफी हो गया है। आरती विनती कर लो और छुट्टी कर लो। बड़ी अपार दया हुई सतगुरु की। महाराज जी कहा करते थे जो सत्संग शांति से हो जाए तो इससे बढ़कर और क्या बात होगी।

।। राधास्वामी ।।